ज्योतिषशास्त्र में नारी की भूमिका

अंजना शर्मा (शंकर पुरस्कार भाजिता)
पूर्व विभागाध्यक्ष, दर्शन विभाग – श्री दादू आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर
लिपि विशेषज्ञ एवं निदेशक – पद्म श्री नारायणदास रामानन्द दर्शन शोध संस्थान, जयपुर

नर एवं नारी दोनों मिलकर संसार का निर्माण करते हैं। अतएव एक दूसरे के पूरक इन दोनों तत्त्वों का विधिपूर्वक समन्वय अत्यावश्यक है। भारतीय संस्कृति वेद मूलक है और वेदों में तीन मार्ग उपदिष्ट हैं वे हैं – कर्म, उपासना एवं ज्ञान। इन तीनों मार्गों का उपपाद्य ही ईश्वर की सत्ता की सार्थकता बताता है। यही मानव मात्र के लिए भी धर्मवत् आदरणीय है। वेदों में वर्णित इन साध्यों के द्वारा केवल पुरुष या मात्र स्त्री को लक्ष्य कर ही वर्णन या निर्देशन नहीं है, अपितु इन माध्यमों में मानवजाति को उपकृत करना ही एकमात्र लक्ष्य रहा है। तथा यह भी सर्व विदित है कि वेद ज्ञान के स्तोत्र हैं। उसमें खोजने पर नारी के महत्त्व को प्रदर्शित करने वाले तत्त्व भी विभिन्न विषयों के दिग्दर्शन होते हैं। वैदिक साहित्य के अनुशीलन द्वारा यह ज्ञात होता है कि उसमें नारी के प्रति उदारता एवं सम्मान का भाव है, जो कि वैदिक सभ्यता भी है।

वही नारी जो कि कन्यावस्था में होते हुए स्वयं को नारी शब्द से व्यवहृत करती है कन्यादानोपरान्त लाजा होम में स्वयं को नारी कहती है –

इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका।
आयुष्मानस्तु मे पतिः एधन्तां ज्ञातयो मम।

समस्त विश्व में तथा मनुष्य जाति के उत्थान हेतु स्त्री प्रतिष्ठा हेतु क्या मानदण्ड होना चाहिए? वर्तमान सन्दर्भ में यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं गौरवास्पद विषय हो सकता है। स्त्री का सामाजिक स्थान, उसकी रचनाधर्मिता, शक्ति, स्वातंत्र्य की सीमा, गुण, स्वभाव, शक्ति, कार्यकुशलता आदि विषयों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर हम इसके महत्त्व को जान सकते हैं। यहाँ यह भी कथन प्रासंगिक होगी कि कर्मफल का भोग आवश्यक है। आर्यपरम्परा में दम्पत्ति पूजन भी होता रहा है चाहे वह सीताराम हो या लक्ष्मीनारायण किन्तु साथ ही शक्ति के प्रतीक रूप में केवल नारीपूजन भी देखा जाता है, कुमारी कन्या, सुवासिनी और कहीं–कहीं गृहत्यागिनी पंथासिनी देवी का अर्चन भी यत्र–तत्र संस्कृत साहित्य में भरा हुआ है। लोक में अनावश्यक भ्रामक प्रचार है कि वेदानुयायियों को सन्तति रूप में कन्या कदाचित् स्वीकार्य नहीं है, किन्तु वैदिक साहित्य मे लिखा गया निम्न वचन भी अपनी भूमिका में जागरूक हैं –

अर्थ य इच्छेद् दुहिता मे पण्डिता जायते सर्वमायुरियात्

(बृहदारण्यक 6/4/17)

इसी प्रकार माता रूप में नारी समाज का वह गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करती है। जो इसकी पूजनीयता, महनीयता से स्वयमेव सिद्ध है।

मातृदेवो भव।..... (तैतिरीय ब्राह्मण 1.11)

और भी **''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''**

माता का स्थान उत्कृष्ट रूप में वर्णित होना हमारे संस्कृत साहित्य में नारी के स्थान की महत्ता को प्रतिपादित करता है सामाजिक दृष्टि से सुदृढ़ एवं स्वस्थ वातावरण एवं नारी जाति को महिमामण्डन करता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में वर्णन प्राप्त होता है, जिसमें मानव के षोडश मातृवत् रिश्ते बताये गये है, जो

मातृवत सम्मान की अधिकारिणी षोडश नारियाँ है

'स्तनदात्री गर्भदात्री भक्ष्यदात्री गुरुप्रिया।
अभीष्टदेवपत्नी च पितुः पत्नी च कन्यका।
सगर्भजा या भगिनी, पुत्रपत्नी प्रियाप्रसूः।
मातुर्माता पितुर्माता सोदरस्य प्रिया तथा।
मातुः पितुश्च भगिनी, मातुलानी तथैव च।
जनानां वेदविहिता, मातरः षोडश स्मृताः।।

(ब्रह्मवैवर्त पुराण 15 अ.)

संस्कृत साहित्य की ही एक अलग विधा है ज्योतिषशास्त्र, जिसे वेद का अंग नेत्र माना गया है, जिस प्रकार मानव शरीर में नेत्र द्वारा देखने की क्रिया का त्रिकाल (भूत, वर्तमान, भविष्य) को जानकर उनमें स्वयं के लिए हितकारी उद्यम कर सकता है।

यद्यपि पुरुष प्रधान समाज की अवधारणा हमारे समाज में आदिकाल से चली आ रही है, किन्तु ज्योतिष में नारी जाति के लिए भी फलित एवं संहिता ग्रन्थों में वर्णन प्राप्त होता है। फलित एवं संहिता ग्रन्थों में वर्णित सिद्धान्तों के आधार पर महिलाओं के व्यक्तित्व, उनके आचार-विचार, कार्यव्यवहार, कार्यव्यापार, शुभाशुभ लक्षणों को जान कर महिला स्वयं अथवा सहयोगी के द्वारा स्व उत्थान, समाजा निर्माण एवं राष्ट्र को दिशा निर्देश भी देती है। वर्तमान में जहाँ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका का कलेवर विस्तृत हो रहा है, वह शुरुआत नहीं है, क्योंकि शुरुआत तो गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, लोपामुद्रा से प्रारम्भ हो चुकी थी राक्षस जाति में भी कैकसी कयाधु (भक्त प्रह्लाद की माता) के चरित्र प्राप्त है, जिनकी सन्तानो की सुयोग्यता द्वारा उनका यशोगान आज भी इस धरा पर गुञ्जायमान ध्वनित हो रहा है।

ज्योतिषशास्त्र वेद पुरुष का नेत्र है, नेत्र का कार्य देखना है। ज्योतिष में नारी का वर्णन प्रारम्भ से ही प्राप्त होता है सूर्य एवं चन्द्रमा दोनों ज्योतिष के तीनों स्कन्धों के मूल आधार हैं।

राजानौ रविशीतगू ----------(बृहज्जातकं ग्रहयोनि. 1)

उक्ति के अनुसार सूर्य को राजा एवं चन्द्रमा को राजपत्नी अर्थात् रानी माना जाता है। सूर्य एवं चन्द्रमा द्वारा तिथि-नक्षत्र एवं योगादि की उत्पत्ति होती है यहाँ न केवल राशियों की स्त्री पुरुष संज्ञा प्राप्त होती है, अपितु नक्षत्रों की जिस प्रकार उग्र, क्रूर, तीक्ष्णादि संज्ञा प्राप्त होती है, वैसे ही स्त्री पुरुष नपुंसकादि वर्गीकरण भी प्राप्त होता है।

फलित स्कन्ध में जातक, तालिका, रमलादि शाखाओं में स्त्री जातक का सम्यक वर्णन प्राप्त होता है इस स्कन्ध के माध्यम से स्त्री जातकों के जीवन, अन्य कार्य व्यवहार, सौभाग्य, लक्ष्मी धनधान्यादि विचार एवं सामुद्रिक लक्षणों के माध्यम से भी स्त्रीजातक का वर्णन प्राप्त होता है। इस स्कन्ध में जहाँ पतिसुख में कमी, सन्तान सुख में कमी, कुलटा योग, साध्वीयोगों का वर्णन है।

ब्रह्मवादिनी स्त्री का लक्षण -

जीवारास्फुजिदैन्दवेषु बलिषु प्राग्लग्नराशौ समे,
विख्याताखिलशास्त्रयुक्तिकुशला स्त्री ब्रह्मवादिन्यपि।।

(जातकपारिजात, स्त्रीजाताकाध्याय 39)

अर्थात् समराशियाँ स्त्रीसंज्ञक राशियाँ हैं, अत: यदि समराशि का लग्न है और बृहस्पति शुक्र बुध बलवान् हो, तो स्त्री विख्यात यशवाली, सम्पूर्ण शास्त्र युक्ति में कुशल और ब्रह्मवादिनी होती है।

इसी प्रकार ज्योतिष हस्तरेखा के माध्यम से नारी जीवन को चित्रित करता है अत: संस्कृत साहित्य के ज्योतिष विषय के माध्यम से समाजोपयोगी नारीरूप को भली प्रकार व्याख्यायित करता है।

वर्तमान युग में जहाँ स्त्री प्रत्येक कर्मक्षेत्र में आगे बढ़ रही है, अत: उसके कार्यक्षेत्र निर्धारणादि व्यवहार हेतु भी ज्योतिष सहायक होता है।

नारी को नर का आधा अंग मानने से उसका महत्त्व स्पष्ट होता है, कि बिना नारी के सहयोग के मनुष्य किसी कार्य, व्यापार धार्मिकक्रिया आदि का संपादित नहीं कर सकता है। स्त्री को शक्ति के रूप में आदर दिया जाता है।

त्वं वैष्णवीशक्तिरनन्तवीर्य्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।

(मार्कण्डेय पुराण, दुर्गासप्तशती)

अत: नारी का त्रिगुणात्मक स्वरूप जो लक्ष्मी, सरस्वती, काली में वर्गीकृत है वही वेदमाता है। स्मृतिकार मनु भी लिखते हैं:- **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः'**

अत: सभी को नारी जाति का सम्मान करना चाहिए तभी सृष्टि एवं भारत वर्ष में समृद्धि की पुन: स्थापना होगी। सभी से यही कहना समीचीन होगा कि -

नारीनिन्दा मत करो, नारी नर की खान।
नारी से पैदा हुए तुलसी सूर खुमान।।